भूमिका

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। इसके लिए हम मूलत: वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मुख से उच्चरित होने वाले शब्दों और वाक्यों का समूह है जिसके द्वारा मन के भावों विचारों का संप्रेषण किया जाता है। सभी भाषाओं की अलग संरचना होती है जिसके कारण एक भाषा अन्य भाषाओं से भिन्न दिखाई देती है। भाषा की प्रकृति को हम कई प्रकार से समझ सकते हैं जैसे-भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है, भाषा अर्जित संपत्ति है, भाषा सामाजिक वस्तु है, भाषा परंपरा है। व्यक्ति उसका अर्जन करता है, भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है, भाषा चिर परिवर्तन शील है। भाषा की अपनी अलग व्यवस्था होती है जिसके माध्यम से व्यक्ति ध्वनि, शब्द, चिह्न, वाक्य आदि के द्वारा अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। कोई भी भाषा कुछ व्याकरणिक नियमों में बंधीं होती है जिसे हम भाषा की संरचना कहते हैं। प्रत्येक भाषा की व्यवस्था का स्वतंत्र अध्ययन किया जा सकता है और दो भाषाओं की व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है। इस प्रकार हम दोनों भाषाओं की इस विभिन्नता को भाषा विज्ञान में लिपि, ध्वनि, रूप तथा वाक्य के माध्यम से तुलना कर सकते हैं। तुलना के आधार पर भाषा की प्रकृति का ज्ञान मिलता है। भाषा में संप्रेषण की दृष्टि से वाक्य आधारभूत इकाई है। वाक्य में क्रिया का स्थान केंद्रीय होता है तथा क्रिया की संरचना में मुख्य क्रिया अर्थात 'धातु' कोशीय अर्थ प्रदान करती है, जिसके साथ जुड़ी हुई सहायक क्रिया के द्वारा व्याकरणिक सूचना प्राप्त होती है। इसमें काल, पक्ष, वृत्ति के साथ-साथ लिंग, वचन, पुरुष की भी सूचना मिलती है। इन व्याकरणिक कोटियों का संबंध कर्ता तथा कर्म से होता है और जिससे क्रिया रूप प्रभावित होते हैं।

प्रस्तुत लघु शोध-कार्य का विषय 'हिंदी-अवधी काल, पक्ष, वृत्ति:व्यतिरेकी विश्लेषण' है इसमें काल, पक्ष, वृत्ति के आधार पर हिंदी-अवधी के क्रिया रूपों का व्यतिरेकी विश्लेषण किया गया है, शोध कार्य में दोनों भाषाओं की क्रिया संरचना में काल, पक्ष, वृत्ति की दृष्टि से जो क्रिया रूप बनते हैं और क्रिया की संरचना पर लिंग, वचन तथा पुरुष आदि के द्वारा व्याकरणिक कोटियों का जो प्रभाव पड़ता है, का अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही उन क्रिया रूपों में पायी जाने वाली समानता तथा असमानता को जानने या देखने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध चार अध्यायों में विभाजित है तथा प्रत्येक अध्याय को शीर्षकों, उपशीर्षकों में बाँटा गया है। इनका संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है-

भूमिका

प्रथम अध्याय का शीर्षक 'क्रिया पदबंध और काल, पक्ष, वृत्ति:परिचय' है इसके अंतर्गत काल, पक्ष, वृत्ति की परिभाषा और प्रकार एवं उपप्रकार का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक 'हिंदी काल, पक्ष, वृत्ति व्यवस्था' है जिसमें हिंदी काल, पक्ष, वृत्ति आधारित मुख्य क्रिया रूप तथा सहायक क्रिया रूपों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय का शीर्षक 'अवधी काल, पक्ष, वृत्ति व्यवस्था' है जिसमें अवधी काल, पक्ष, वृत्ति आधारित मुख्य क्रिया रूप तथा सहायक क्रिया रूप का विस्तृत वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक 'हिंदी-अवधी काल, पक्ष, वृत्ति:व्यतिरेकी विश्लेषण' है जिसमें हिंदी-अवधी का क्रिया रूपों का काल, पक्ष, वृत्ति की दृष्टि से व्यतिरेकी विश्लेषण किया गया है।

उपसंहार में दोनों भाषाओं (हिंदी-अवधी) में जो समानता तथा असमानता पायी जाती है उसे काल, पक्ष, वृत्ति के साथ-साथ लिंग, वचन, पुरुष के द्वारा जो निष्कर्ष निकलता है उसका सक्षेप में वर्णन किया गया है।

❖